शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका

अंक:9; जुलाई-दिसंबर, 2024; पृष्ठ संख्या : 81-90

हिंदी कथा साहित्य में 'गे काउंटरकल्चर' की खंडित परंपरा: दृश्यता और संघर्ष

जयकृष्णन एम्

शोध-सार :

'काउंटरकल्चर' उन समूहों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्थापित सामाजिक मूल्यों और प्रथाओं को अस्वीकार करके मुख्यधारा के खिलाफ नये,अक्सर क्रन्तिकारी जीवन शैली को अपनाते हैं। भारतीय समाज में समलैंगिकता 21वीं सदी के पूर्व काउंटरकल्चर के रूप में प्रमुखता प्राप्त नहीं कर पाई, लेकिन हिंदी साहित्य में ऐसी एक अदृश्य, खंडित इतिहास धारा उपस्थित थी, जहाँ प्रगतिशील लेखक ने नैतिकता, पहचान और संस्कृति को फिर से परिभाषित करने की कोशिश की। यह शोध आलेख हिंदी साहित्य के इस अदृश्य इतिहास का अवलोकन और विश्लेषण करता है, जो विक्टोरियन पवित्रता आंदोलनों से लेकर स्वतंत्रता के बाद हुई मोहभंग की वास्तविकता और पूंजीवाद के उदय तक के आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के बाद उभरा है। इस अध्ययन के लिए, कुल चार कहानी संकलन और उपन्यास चुने गये हैं, जो पाँच दशकों से अधिक की अवधि में भारत में समलैंगिक व्यक्तियों के 'अदृश्य' जीवन अनुभव और जटिल प्रतिसंस्कृति को दर्शाते हैं। इस अध्ययन में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की 'चॉकलेट', राजकमल चौधरी की 'भूगोल का प्रारंभिक ज्ञान', अमरकांत का 'सूखा पत्ता' और अमित गुप्त का 'देहरी पर ठिठकी धुप' के माध्यम से हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त गे काउंटरकल्चर की बारीकियों को परखने का प्रयास किया गया है।

बीज-शब्द : *काउंटरकल्चर, सभ्यता, संस्कृति, गे कल्चर, समलैंगिकता, हिंदी कथा साहित्य*